ग्वालियर अंचल की स्वातंत्र्योत्तर नवगीत परंपरा और जीवन मूल्य

ब्रजेन्द्र सिंह गुर्जर
शोधार्थी– जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

ग्वालियर एक पुरातन कला नगर है। साहित्य, कला, संस्कृति और गीत–संगीत इसके रोम–रोम में रचा बसा है। गीत और संगीत के लिये विश्व में प्रसिद्ध यह नगर और इसके आसपास का क्षेत्र आज भी अपनी कला और गीत–साधना के लिये जाना जाता है। यहाँ एक ओर तानसेन, बैजू बावरा, राजा मानसिंह तोमर, विष्णु दिगंबर पलुस्कर, पंडित कृष्ण राव–शंकर पंडित और राजा भैया पूछ वाले जैसे महान संगीतकार हुए हैं तो दूसरी और महाकवि भवभूति, महाकवि विष्णुदास, बिहारी, पद्माकर, केशवदास, संत महीपतनाथ और बलवंत भैया जैसे कवियों ने भी इस भूमि को अपनी तपःस्थली बनाकर गीति–काव्य का इतिहास रचा है।

ग्वालियर अंचल की इसी गीत–परंपरा में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद, हरेश मिश्र, चंद्रिका प्रसाद मिश्र, शांति स्वरूप चाचा, रूद्र दत्त मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद उपासक, घनश्याम कश्यप, पंडित आनंद मिश्र, श्री कृष्ण सरल, छोटेलाल भारद्वाज, रामकुमार चतुर्वेदी चंचल, कविरत्न पाराशर, प्रदीप मधु जोशी, छोटेलाल भारद्वाज, दामोदरदास चतुर्वेदी, प्रभाकर माचवे, गजानन माधव मुक्तिबोध, देवेन्द्र नारायण वर्मा, गिरिजा कुमार माथुर, अटल बिहारी बाजपेई, रामरज शर्मा पंकिल, वीरेन्द्र मिश्र, डॉ. पूनम चंद तिवारी, शिवनारायण सुयोगी, वचन श्रीवास्तव, परशुराम विरही, जयंती अग्रवाल, जगदीश परमार, मुकुट बिहारी सरोज, विश्वंभर आरोही, शैवाल सत्यार्थी, महेन्द्र भटनागर, चिरंजीलाल भावुक, डॉ. देवेन्द्र नारायण वर्मा, रमेश सक्सेना, कुंज बिहारी व्यास, डॉ. केशव प्रसाद व्यास, दामोदर शर्मा, बलवंत सिंह तोमर आदि गीतिकवियों ने अपन गीतों से देश के रसिक श्रोताओं को आनंद की अनुभूति से सराबोर कर दिया।

ग्वालियर अंचल के इन गीतकारों ने न केवल अपनी काव्य कृ तियों के माध्यम से बल्कि हिंदी जगत के प्रतिष्ठित काव्य मंचों के

माध्यम से हिंदी साहित्य कोष की श्रीवृद्धि कर एक अतुलनीय योगदान दिया।

इन गीतिकाव्य के पुरोधाओं ने ग्वालियर अंचल की नवागंतुक साहित्यिक पीढ़ी को न केवल गीत और छंद का संस्कार दिया, बल्कि अपने साहित्य के माध्यम से इस अंचल की भूमि पर मानवीय मूल्यों के बीज भी बो दिये। मानवता, विश्व–बंधुत्व, एकता, सहिष्णुता, प्रेम, सद्भाव, समरसता, परोपकार, ईमानदारी, निष्ठा, देशभक्ति और उदारता के मूल्यों से सींच कर ग्वालियर के स्वातंत्र्यपूर्व युग के कवि–गीतकारों ने इस नगर को वैचारिक क्रांति का ऐसा महामंत्र दिया जिसके बल पर ग्वालियर अंचल ने देश की स्वाधीनता के लिये समर्पित एक क्रांतिदर्शी गीतकारों की पूरी की पूरी पीढ़ी तैयार की।

सन् 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली। सन् 1960 तक नव निर्माण के स्वप्न देखने वाली युवा पीढ़ी ने युग निर्माण के गीत गाये। 1962 में चीनी आक्रमण और देश में छाई भुखमरी के हालात ने रचनाकारों का मोहभंग कर दिया। अब युवा कवियों ने युगीन परिस्थितियों एवं जन सरोकारों को केंद्र में रखकर यथार्थवादी गीतों द्वारा जन जागरण के लिये शंखनाद शुरू कर दिया।

ग्वालियर अंचल की स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ी के गीतकारों ने समकालीन दौर की नई कविता के समानांतर लोकचेतना और जनजीवन की यथार्थ भूमि पर गहरी संवेदना के साथ और विषमता के विरुद्ध गीतों का सृजन आरंभ किया। इन नई सोच के यथार्थवादी गीतकारों को हिंदी में लघ् पत्रिकाओं के माध्यम से देश में एक नई पहचान मिली। पंडित वीरेन्द्र मिश्र ने ग्वालियर अंचल की नई पीढ़ी को नये गीत लिखने की प्रेरणा दी तो राजेंद्र प्रसाद सिंह (पटना) की गीतांगिनी के प्रकाशन और नये गीतों को नया नाम 'नवगीत' मिल जाने के बाद से तो नवगीत लेखन का ग्वालियर में भी एक नया दौर शुरू हुआ। विद्यानंदन राजीव, परशुराम विरही, मोहन अंबर, प्रदीप मधु जोशी, भारत अचलेश, माया वर्मा, डॉ. श्यामा सलिल, राजकुमारी रश्मि, डॉ. माधुरी शुक्ला, शंकर सक्सेना, महेश अनघ, राम प्रकाश अनुरागी, डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य, ज़हीर कुरैशी, प्रकाश मिश्र, बैजू कानूनगो, दामोदर शर्मा, मुरारी लाल गीतेश, ऋचा सिंह, डॉ. पुष्पा सिसोदिया, डॉ. ऋचा सत्यार्थी, शरद चौहान, प्रेम बहादुर अजय, विश्वंभर आरोही, मुकुट बिहारी सरोज, ब्रजेश चंद्र श्रीवास्तव, कोमल कल्याण, डॉ. कीर्ति काले, इंदिरा 'इंदु' भगवती प्रसाद कुलश्रेष्ठ, राजेश शर्मा, प्रदीप पुष्पेंद्र, सीताराम बघेल, छीतरमल सोनी, दिनेश भारद्वाज, डॉ. जगदीश सलिल, शकुंतला सुरभि, घनश्याम भारती आदि अनेक नवगीतकारों ने ग्वालियर अंचल की पारंपरिक गीत परंपरा को कल्पना के लोक से धरती पर उतारकर युगीन संदर्भों, असल जिंदगी के यथार्थ और जन सरोकारों से जोड़कर शोषित–वंचित जनता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता घोषित कर समकालीन

गीत परंपरा की लोक चेतना और सामाजिक परिवर्तन के लिये संघर्षरत नवगीत परंपरा से अपना नाता जोड़ा। गीत के इस नये संस्करण को जब नवगीत के रूप में मान्यता मिलने लगी तो नई कविता और प्रयोगवाद के समर्थकों ने गीत की वापसी जैसे लेख लिखकर नवगीत का स्वागत किया।

सन् 1975 में जब देश में आपातकाल लगा, तब ग्वालियर में नवगीत के कवियों ने लोकतंत्र के समर्थन में व्यवस्था विरोधी गीत लिखकर अपनी जान प्रतिबद्धता को प्रमाणित भी किया। पंडित आनंद मिश्र ने अपने गीतों के जरिये शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करते हुए लिखा है–

''दे रहा रोटी

सुबह अखबार तेरी जय!

भूख से लड़ती हुई

सरकार तेरी जय।''[i]

'आस्था के शिखर' में प्रकाशित पंडित आनंद मिश्र अपने एक गीत में विषमता के विरुद्ध संकेत करते हुए लिखते हैं–

''बादल इतना बरस रहे हैं,

तो भी पौधे तरस रहे हैं!

यही चमन को अचरज भारी,

पानी कहाँ चला जाता है?''[ii]

डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य आपातकाल के विरुद्ध अपनी काव्य कृति और हम खामोश हैं के एक नवगीत में लिखते हैं–

''हर खुशी गम में घुली है,

रोशनी तम में घुली है,

यातनाओं के शिविर हैं,

और भारतवर्ष है।''[iii]

अपनी मुक्तिबोध पुरस्कार से सम्मानित कृति 'धमनियों के देश में' (1974) में प्रकाशित एक नवगीत के माध्यम से वे सामान्य जन की पीड़ा को कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं–

''आशियाना जल रहा है

और हम खामोश हैं!

दर्द तिनके का यहाँ किससे कहें हम?

गीत, झुलसे पंख की लंबी कथा है,

यात्रा के बीच हम कैसे सुनाएं?

आचरण के कोष तक खाली हुए हैं,

वक्त से हम क्या उधारे, क्या चुकाएं?''[iv]

एक और नवगीत में वे आम आदमी की तकलीफ को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''धारदार पंख मत पसार री व्यथा।

कहने दे शेष को अशेष की कथा।।''[v]

ग्वालियर की डॉ. श्यामा सलिल अपनी गीत कृति 'कहा गुलाब ने' में युद्ध के विरुद्ध अपने विचार प्रकट करते हुए लिखती हैं–

''सोने की धरा, नीलम का गगन

यह महका हुआ फूलों का चमन

बारूद के काले धुएं से

बदरंग न होने देंगे कभी

हम जंग न होने देंगे कभी।''[vi]

'बस यहीं तक' गीत संग्रह की प्रतिष्ठित गीतकार ग्वालियर की डॉ. माधुरी शुक्ला ने स्वातंत्र्योत्तर नवगीत परंपरा में एक नया अध्याय जोड़ा है। नारी अस्मिता की रक्षा के लिये, उत्पीडित नारी समाज को घरेलू हिंसा से बचाने के संघर्ष में वे शहीद हो गई। उन्होंने अपने नवगीतां से नवगीत की एक नई परंपरा की पगडंडी तैयार की। इस दृष्टि से वह प्रगतिशील जनचेतना की एक प्रखर समकालीन नव गीतकार हैं। युग–परिवेश की पीड़ा का एहसास और अन्याय पूर्ण व्यवस्था के प्रति उनके गीतों में विद्रोही मानसिकता स्पष्ट दिखाई देती है। वे लिखती हैं–

''हो कितनी ही गहरी घात।

दिया जलेगा सारी रात।

नेह चुके या आँधी आये,

बाती फिर भी ज्योति जगाये।

झेलेगी तम के आघात।

दिया जलेगा सारी रात।''[xvii]

महेश अनघ की नवगीत कृति 'झनन झकास' एक तपस्वी रचनाकार की साधना का प्रतिफल है। वे धारदार व्यंजना के अप्रतिम नवगीतकार हैं। आंचलिकता एवं ग्राम्यबोध उनके गीतों में बिखरा पड़ा है। गीत को परिभाषित करते हुए महेश अनघ ने लिखा है–

''गीत शहजादा नहीं है,

एक नन्ही जान है।

इधर आँसू, उधर आँसू,

बीच में मुस्कान है।''[xviii]

स्वातंत्र्योत्तर नवगीत परंपरा में ग्वालियर की राजकुमारी रश्मि एक सशक्त नवगीत हस्ताक्षर है। 'पत्र लिखा किसने गुमनाम' उनका नवगीत संग्रह देश भर में पढ़ा गया और उनका यह नवगीत अनेक कवि सम्मेलनों में बार–बार सुना गया। इस संग्रह ने नवगीत के शिल्प और कथ्य को नई ऊँचाइयाँ दीं और हिंदी काव्य

जगत में रश्मि जी के कृतित्व से ग्वालियर को भी गौरवान्वित होने का अवसर मिला। वे नवगीत की महायात्रा की सहचरी है, और 80 वर्ष की आयु में अभी भी उनके नवगीत संग्रह छपकर आ रहे हैं। अभी हाल ही में प्रकाशित उनके नवगीत संग्रह एक और शंखनाद तथा धूप के पंख की साहित्य जगत में खूब चर्चा है। उनके नवगीत कथ्य एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत मौलिक, प्रेरक और सामाजिक चेतना से सराबोर हैं। उनके एक प्रेम गीत की लोकप्रिय पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

''पत्र लिखा किसने गुमनाम।

छोड़ दिया हाशिया तमाम।।''[ix]

ग्वालियर विभूति पंडित वीरेंद्र मिश्र जी के हजारों नवगीत अब 'गीत–समग्र' के चार खण्डों में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें नवगीत का शिखर पुरुष कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। नवगीत को एक नई भाषा, नया कथ्य, नया शिल्प, नई शैली और नया संगीत देकर वीरेंद्र मिश्र जी ने नवगीत को विश्व स्तरीय साहित्य में सम्मान दिलवाया है।

पंडित वीरेंद्र मिश्र को 'गीत यात्री' की उपमा दी जाती है। वह गीत से नवगीत तक गीत की पूरी विकास यात्रा के प्रमुख यात्री रहे हैं। उनके संपादन में निकली 'सांध्य मित्रा' पत्रिका मुंबई ने भी नवगीत आंदोलन को गति दी।

वीरेंद्र मिश्र जी ने गीत की जड़ता को तोड़ा और उसे जन, जीवन और ज़मीन से जोड़कर एक नई युग चेतना से आप्लावित कर दिया। गीत को नवगीत के रूप में स्थापित करने में तथा नवगीत के इतिहास में एक नया प्रतिमान रचने में वीरेंद्र मिश्र के कृतित्व का साहित्य में अमूल्य योगदान रहा है। उनका एक प्रसिद्ध नवगीत है।

''कंधे पर धरे हुए खूनी यूरेनियम

हंसता है तम!

युद्धों के मलबे से उठते हैं प्रश्न

और गिरते हैं हम!!''[x]

परमाणु युद्ध को रोकने और विश्व शांति की दिशा में उनका यह नवगीत विश्व में एक नया कीर्तिमान रचता है। हिंदी जगत में ग्वालियर अंचल की स्वातंत्र्योत्तर युगीन नवगीत पीढ़ी के अन्य उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं–

मोहन अंबर, ओम प्रभाकर, विश्वंभर आरोही, माया वर्मा, मनोज जैन, मधुर, राम प्रकाश अनुरागी, ब्रजेश चंद्र श्रीवास्तव, महेंद्र मुक्त, कीर्ति काले, प्रकाश मिश्र, शरद चौहान, राजेश शर्मा, गिरिजा कुलश्रेष्ठ, प्रतिभा द्विवेदी, धीरेंद्र गहलोत धीर, घनश्याम भारती, सुरेश नीरव, राम प्रकाश चौधरी, रागी आदि।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ग्वालियर अंचल की स्वातंत्र्योत्तर नवगीत परंपरा में यहाँ ग्वालियर अंचल के कवियों का नवगीत विधा के विकास एवं उन्नयन में अविस्मरणीय योगदान है। ग्वालियर अंचल की गीत परंपरा गीत से नवगीत तक एक पूरा इतिहास रचती है, जिसमें कथ्य, शिल्प एवं जीवन मूल्यों का अमूल्य संदेश छिपा है। निस्संदेह इस अंचल के नवगीतकारो का कृतित्व प्रणम्य है।

संदर्भ सूची

[i] मध्य प्रदेश संदेश, सं. अंबा प्रसाद श्रीवास्तव (मई 1976) जनसंपर्क, मध्य प्रदेश भोपाल, पृष्ठ 12

[ii] आस्था के शिखर, पूर्वा प्रकाशन ग्वालियर, सन् 1962, पृष्ठ 5

[iii] सं. आनंद मिश्रा, और हम खामोश हैं, भगवान स्वरूप चैतन्य, 1978, परमाणु प्रकाशन ग्वालियर, पृष्ठ 29

[iv] धमनियों के देश में, भगवान स्वरूप चैतन्य, 1976, परमाणु प्रकाशन ग्वालियर, पृष्ठ क्रमांक 17

[v] धमनियों के देश में, भगवान स्वरूप चैतन्य, 1974 परमाणु प्रकाशन ग्वालियर, पृष्ठ क्रमांक 16

[vi] कहा गुलाब ने, डॉ. श्यामा सलिल, अनुभव प्रकाशन, संस्करण 2001, दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 32

[vii] बस यहीं तक, डॉ. माधुरी शुक्ला, अनुभव प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ क्रमांक 45

[viii] झनन झकास, नवगीत संग्रह, महेश अनघ, अनुभव प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2006, पृष्ठ 34

[ix] पत्र लिखा किसने गुमनाम, राजकुमारी रश्मि, अनुभव प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1972, पृष्ठ 22

[x] श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन, कन्हैया लाल नंदन, साहित्य अकादमी दिल्ली, संस्करण 2009, पृष्ठ 45

Contributors Details:

ब्रजेन्द्र सिंह गुर्जर
शोधार्थी– जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर